CS (MAIN) EXAM, 2010

Sl. No. 198

D–DTN–K–NJB

MAITHILI

Paper—II

(Literature)

Time Allowed : Three Hours	Maximum Marks : 300

INSTRUCTIONS

Candidates should attempt Question Nos. 1 and 5 which are compulsory, and any THREE of the remaining questions, selecting at least ONE question from each Section.

The number of marks carried by each question is indicated at the end of the question.

Answers must be written in Maithili.

Section—A

1. निम्नलिखित कोनो तीन अवतरणक सप्रसंग व्याख्या प्रस्तुत करैत ओहिमे सन्निहित भाव आ ओकर काव्यगत वैशिष्ट्यकें स्पष्ट करू (उत्तर अधिकतम *200* शब्दमे दातव्य) : 20×3=60

(क) अगमने प्रेम गमने कुल जाएत
चिन्ता पंक लागलि करिणी
मञे अबला दह दिस भमि झाखञो
जनि व्याध डरे भीरु हरिणी॥
चन्दा दुरजन गमन विरोधक
उगल गगन भरि बैरि मोरा॥
कुहु भरमे पथ पद आरोपल
आए तुलाएल पंचदशी
हरि अभिसार मार उदबेजक
कञोने निबारब कुगत ससी॥

(ख) सुइ लय बेधिअ गाँथिअ ताग।
हाथ छुबिअ तओं हाथहि लाग॥
गरजि सघन घन बरिसय बारी।
तैं फनिपति फना देलन्हि पसारी॥
लागल झड़ी भुलल सब दीग।
पशु पच्छी सब परल अदीग॥
सूर्य सुधाकर खोजलों ने पाबिअ।
कमल कुमुद निसि बासर जानिअ॥

(ग) आम्र सुकानन पनसोद्यान। सुभग सुशीतल छायावान॥
सुभग पवित्रित प्रचुर तड़ाग। निर्मल वारि अमृतसन लाग॥
धेनु बकेन वत्सयुत गाय। झुराड झुराड देखल रघुराय॥
अति अपूर्व शोभा विस्तार। धर्म-निरत सभ शुद्धाचार॥
वन-उपवन मुनि आश्रम सहित। मंजुल बंजुल दूषण-रहित॥

(घ) दशरथ रथ सँ पथ प्रशस्त जत परम पुरुष अवतार।
रामराज्य आदर्श उपस्थित विश्व-शासनक सार॥

मैथिलीक पति-भक्ति एतहि भरतक भ्रातृत्व अनूप।
सौमित्रिक चारित्र्य चित्र सँ जगमग कीर्त्ति-स्तूप॥

चरण पखारथि भक्ति-भाव सँ सरयू पावन नीर।
वन उपवन फल फूल चढ़ाबथि डोलबथि चमर समीर॥

ईति-भीति नहि एको व्यापित रोग-शोक नहि रंच।
प्रजा धर्मपथ चलथि स्वयं, ने कनिञो कपट प्रपंच॥

2. ''कवीश्वर चन्दा झा 'मिथिला भाषा रामायण'मे छन्दक विविधता ओ लोकोक्तिक विलक्षणताक संगहि वर्णनक चित्ताकर्षक छवि प्रस्तुत कयने छथि''—एहि कथन पर विचार करू। 60

3. ''रसना रोचन श्रवण-विलास
रचइ रुचिर पद गोविन्ददास।''

एहि पंक्तिक आलोकमे गोविन्ददासक काव्य-सौन्दर्यक निरूपण करू। 60

4. लोकमुखी शब्दावलीक प्रयोग द्वारा साहित्यक आत्मीयता एवं व्यापकताकें दृढ़ करबामे प्रगतिवादी यात्रीक 'चित्रा' सर्वाधिक लोकप्रिय भेल अछि—सयुक्ति विवेचन करू। 60

Section—B

5. निम्नलिखित कोनो **तीन** गद्यांशक सन्दर्भसहित व्याख्या करैत ओहिमे निहित अभिव्यंजनागत ओ कथ्यगत विशेषता पर प्रकाश दिअ (उत्तर अधिकतम *200* शब्दमे दातव्य) : 20×3=60

(क) कँपैत हाथ सँ अलमुनियमक पचकलहा बाटी उठा क' रेजकी गनलक। अद्धन्नी आ पाइ मिला क' सबा तीन आना। देबालमे सटलि, जाड़ेँ थर-थर करैत छौंड़ी दिस बिन तकनहि बुढ़िआ बाजलि—''पिरथी सँ दया-धरम उठि गेलइ... एगो पइसो दइमे मोह होइ हइ लोकके त' गरीब भिखमङ्गा कोना जीउतइ... छौंड़ी घुसकि क' नानीक देहमे सटि गेलि। तेहेन ने कटकटौआ बसात चलैत छलइए। तखन, बुढ़िआ कहुना ठेंगा ध' क' उठलि। मुदा तुरन्ते ने तेहेन सन-सन करैत पछबा उठलैक जे बुढ़िआ पाकल आम जकाँ धप्पसँ खसि पड़लि। विवस्त्र शरीरक गत्र-गत्र पछबा बेध' लगलैक।

(ख) भोजने सँ प्रकृति बनैत छैक। चाली माटि खा कऽ माटि भेल रहैत अछि। साँप बसात पीबि कऽ फनकैत अछि। साहेब सभ डबल रोटी खा कऽ फूलल रहैत अछि। मुर्गा खैनिहार मुर्गा जकाँ लड़ैत अछि। और हम सभ साग-भाँटा खा कऽ साग-भाँटा भेल छी। हमरालोकनि भक्त (भात)क प्रेमी थिकहुँ, तेँ एक दोसरा सँ विभक्त रहैत छी। ताहू पर की त द्विदल (दालि)क योग भेले ताकय! तखन एक दल भऽ कऽ कोना रहि सकैत छी?

(ग) जें आइ सभ नवयुवकक लक्ष्य नोकरियेटा भऽ गेलैए तें सभतरि निराशाक वातावरण बनि गेल छै। चाही ई जे नोकरीयोकें एक साधन बूझल जाय। जेना ई संसार अनन्त अछि तहिना साधनो असीमित छैक। मोनकें एके खुट्टासँ बन्हने रहब मनुक्खक मर्यादाकें आ ओकर सामर्थ्यकें अपमान करब थिक।

(घ) कुमुद' कुन्द' कदम्ब' कास' भास कैलास' कर्प्पूर पीयूषक कान्ति प्रसारी सन' क्षीरसमुद्रक दक्षिणानिले चालल तरङ्गक लहरी अइसन· अमृतक सरोवर तरङ्गक सहोदर सन· शरतक पूर्णिमाचान्दक ज्योत्स्ना अइसन· अभिनव प्रकाशित कमलकोष प्रसारि शोभा सन· कन्दर्प्पक दर्प्पप्रकाशन सन· त्रैलोक्यक नागरजन युवजन हृदयमोहन मन्त्रसन· स्वेद· स्तम्भ· रोमाञ्च· स्वरभङ्ग· कम्प· वैवर्ण्य· अश्रु· प्रलय इ ये आठओ सात्विक भाव ताक भण्डार सन·

6. "राजकमल मैथिली कथाक शब्द-शब्दमे नवीनता ओ प्रयोगधर्मिताक झलक देखबैत छथि, जेहने भाव-वस्तुमे, तेहने अभिव्यक्ति-शैलीमे।" एहि उक्तिक समीक्षा करू। 60

7. "हरिमोहन झा व्यंग्यकें विधाक मान्यता प्रदान करबैत दार्शनिक चिन्तनक संगहि लेखकीय पांडित्यक परिचय देबामे पूर्ण सफल भेल छथि"—'खट्टर ककाक तरंग'क आलोकमे एहि कथन पर विचार करू। 60

8. मैथिली भाषा-साहित्यक आदि गद्य-ग्रन्थ 'वर्णरत्नाकर' काव्य नहि काव्योपयोगी ग्रन्थ तँ अछि ये संगहि एहि सँ मध्यकालीन मिथिलाक सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितिक परिचय प्राप्त होइत अछि—युक्तियुक्त विवेचन करू। 60

★ ★ ★